INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 09-11
Received: 08-10-2022
Accepted: 16-11-2022

डॉ. सचिन दाधीच
अथिति सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना), चित्रकला विभाग, सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सचिन दाधीच
अथिति सहायक आचार्य (विद्या संबल योजना), चित्रकला विभाग, सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

राजस्थान की जनजातीय कला एवं प्रभावित समकालीन कलाकार

डॉ. सचिन दाधीच

भूमिका

विश्व अनेक भू–भागों पर निर्वासित करने वाली आदिवासी एवं वन्य जनजातियां द्वारा सृजित की गई कला जो कि जनसाधारण अथवा क्षेत्र, जाति विशेष द्वारा विशेष विषय पर आधारित कार्य कौशल पर अपनी धार्मिक एवं प्रतीकात्मक संस्कृति को किसी न किसी माध्यम से किसी धरातल पर प्रकट करते रहे हैं, यह जनजातीय कला कहलाती आयी है।

प्रायः यह जनजातियां अतिसाधारण जन–जीवन जीने वाले लोगों द्वारा अपनाए गए सांस्कृतिक मूल्यों, धार्मिक अनुष्ठानो, उत्सवो, त्यौहारों व रीति–रिवाजों से जुड़े हुए हैं। अपने कलात्मक कौशल से संबंधित होकर अपनी परंपरागत अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं, जो यथावत अविरल गति से जनजातिय अंचलो में चली आ रही है। जनजातीय कला की जड़े मूलतः ग्रामीण वासियों एवं कबीला संस्कृति से जुड़ी हुई है। पुरखा कालीन इन जनजातियों की अपनी भिन्न–भिन्न संस्कृति एवं भिन्न–भिन्न रीति–रिवाजों, कानून–व्यवस्था और नियमों से परिपूर्ण है, यह रीति–रिवाज, परंपराएं, संस्कृति इसी प्रकृति के प्राकृतिक वातावरण की देन से विकसित हुई है। इन्ही प्रवृत्तियों पर आधारित वातावरणीय उघोग, कलात्मक उपकरण व वस्तुएं, वस्त्र–आभूषण व साथ ही घर की भत्तियों, आंगन, रसोई घर की निर्माण सामग्री व साज–सज्जा, रूप–सज्जा व क्रियात्मक अंकन परंपरागत पद्धति से पीढ़ि दर पीढ़ि स्थानांतरित होता आयी है यही से कला का मौलिक स्वरूप स्थापित हुआ है।

जनजातीय कला के वैश्विक उदाहरण अफ्रीका, चीन, स्पेन, उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया व भारत आदि प्रमुख देश रहे हैं। भारत में अधिकांश जनजातियां राजस्थान, असम, मिजोरम, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गोवा एवं लक्ष्यदीप में निवास करती है। जहां मुख्यता गौड, संथाल, भील, लोहाल, साम्होल, गरासिया, सहरिया तमाम जनजातियां अपनी भिन्न–भिन्न संस्कृति की गरिमाओं के साथ जीवन का आनंद उत्साह के साथ ले रही है। यह जनजातिया सौंदर्य श्रृंगार की साज–सज्जा से लेकर रण–कौशल के युद्धाभ्यास, चित्रकारी, शिल्पकला से लेकर कढ़ाई–बुनाई की घरेलू आवश्यकताओं की कलात्मक वस्तुएं जो कि हर स्तर पर परंपरागत पीढ़ी दर पीढ़ी दिए गए संस्कारों की संस्कृति की दृष्टि से परिपक्व और संपन्न है। इन्हीं लोक संस्कृति के माध्यम से ही कलाओं का प्रस्फुटन होता आ रहा है।

इनके पल्लवन एवं संवर्धन में लोक आस्था एवं विश्वास की घनिष्ठ भूमिका रही है, इन जनजातीय संस्कृति में लोक कलाओं का अथाह संसार का भंडारण मौजूद है।

भारतवर्ष की संपूर्ण वर्ग विशेष के सभी मांगलिक कार्यों, त्योहारों, उत्सव के अवसरों पर मांडना चित्रकारी की अलौकिक कला प्रक्रिया की प्रथा बड़ी आकर्षक एवं रोमांचकारी है, जिसमें जीवन की विविध झांकियो के स्वर्णिम पक्ष को अपनी भित्तियो व अन्य माध्यमों द्वारा कहीं ना कहीं अभिव्यक्त किया करते थे।

राजस्थान प्रदेश विभिन्न कलाओं के साथ पराक्रम, साहस, त्याग, बलिदान के लिए जाना जाता रहा है, राजस्थान राज्य में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, वास्तु, स्थापत्य एवं साहित्य कला के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। वही लोक कलाओं के क्षेत्र में पिछवाई, टेराकोटा, थेवा कला, कठपुतलियां, कावड़, फड़, मांडणा एवं जनजातियों की गोदना प्रथा आदि कलाओं की दृष्टि से समृद्ध शाली राज्य रहा है।

पूर्वी राजस्थान में मीणा जनजाति, दक्षिणी राजस्थान में भील, गरासिया, कथोड़ी, डामोर जनजाति निवास करती हैं एवं बांरा जिले में सहरिया जनजाति निवास करती है। इन आदिवासी अंचलों में जनजातियों द्वारा उत्सव व त्यौहारों पर मांगलिक चित्ररामो का निर्माण भित्तियों पर किया जाता है। राजस्थान की भील आदिवासी जनजाति द्वारा जैसे खजूर के पत्तों द्वारा भी कलाकृतियों का सृजन किया जाता है।

इन जनजातीय कलाओं से प्रभावित होने वाले कलाकारों की सूची में गोवर्धन लाल जोशी (बाबा), दिनेश जी उपाध्याय, रामदेवमीणा, ओमप्रकाश मीणा, फुलाजी, डॉ. यशपाल बरण्डा, दिलीप डामोर, मांगीलाल भील, भूखा जी, डिंपल, सीमा डामोर, चंद्रिका, रमेश असोड़ा आदि उल्लेखनीय कलाकार हैं, जो जनजातीय कला एवं अपनी कलागत अनुभूतियों द्वारा कला के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

उदयपुर के गिर्वा में स्थित छोटी उंदरी व बड़ी उंदरी के गांव में रहने वाले चित्रकारों में गोमा पारगी, फूला पारगी का नाम आता है। उक्त कलाकारों को माणिक्य लाल वर्मा आदिमजाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा उन्हें खोज कर अपनी जनजातिय कलाओं को कागज तथा कैनवास पर उतारने हेतु यहां सृजनात्मक प्रस्तुति 1984 में संस्थान द्वारा मंच पर प्रस्तुत की गई हैं। यह भील जनजाति अपने घरों कि भित्तियों पर चित्रकारी अपनी पुरखा कालीन कला को ही प्रेरित व सृजित करते हुए आये हैं, जिनमें देवी–देवताओं, पशु–पक्षियों एवं फूल–पत्तियों के संयोजन निर्मित कर अपने घरों का सौंदर्यीकरण शिव–पार्वती की गाथा एवं दिव्य शक्तियों की पूजा विधानों के अंतर्गत करते हैं।

रामदेव मीणा : बूंदी जिले के निवासी एवं बूंदी के राजकीय महाविद्यालय के सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत रामदेव जी ने पेपर मेशी में अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु नर–नारी कि मुखाकृतियों को जनजातीय कला संस्कृति एवं परंपरा से प्रभावित होकर अपने चित्रों एवं शिल्पकला माध्यम में सृजित किया है, अपने चित्रों में मोर, शेर, पशु–पक्षी, मांडना को घरेलू उपयोगी सामग्री को ज्यामितिय आकारो गेरू एवं सफेद रंगों में रंगा है, तथा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा आयोजित होने वाले शिविरों में अपनी कला की अभिव्यक्ति जनजातीय विषय के रूप में सृजित कर इस कला परंपरा को आगे बढ़ाया है।

ओमप्रकाश मीणा

बूंदी के निवासी ओमप्रकाश ने कैनवास पर मीणा जनजातीय द्वारा निर्मित संस्कृति की कला को चित्रित कर रहे हैं। बचपन से ही कलात्मक वातावरण से संबंधित होने के कारण ओमप्रकाश ने परंपरागत तकनीकी जानकारी से आपने देश में विद्यमान कला संगठनों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत की है, तथा दिनेश उपाध्याय जी एवं रामदेव मीणा के निर्देशन व मार्गदर्शन प्राप्त कर ओमप्रकाश जी ने अपनी कलाकारी की तकनीकों में सुधार एवं सामंजस्य स्थापित कर परंपरागत कला तकनीकों को उज्जवल मुकाम तक पहुंचाया है।

डॉ. यशपाल बरण्डा

ग्रामीण परिवेश से जुड़े हुए उदार उद्यमी डॉ. यशपाल बरण्डा जो नया गांव (कनबई) खेरवाड़ा के एक भील परिवार में जन्म हुआ। डॉ. बरण्डा अपनी पारंपरिक भीली संस्कृति एवं समकालीन कला के सम्मिश्रण से अपनी अभिव्यक्ति को अमूर्तता के रूप में नयी दृश्य कला भाषा को सृजित कर रहे हैं। विषय की दृष्टि से इनके विषय भील जनजाति समाज की मौलिक संस्कृतियों से जुड़े हुए हैं वही रंगों का पूर्णत प्रभाव आधुनिक है। भीली विषय एवं आधुनिक रंगो के विपरीतार्थ होते हुए भी पारंपरिक राजस्थानी भीली संस्कृति से अपने आप को जोड़े रखना एवं आधुनिकता की होड़ में अपनी संस्कृति को परंपरागत मूल्यों के साथ आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

प्रारंभ में बरण्डा ने कैनवास पर अपनी ग्रामीण अंचल की भित्ति निर्माण कला सजृन तकनीक को सृजित किया, धीरे–धीरे बरण्डा ने अपने गुरुजनों के मार्गदर्शन द्वारा दी गई कला शिक्षा की जानकारियों से अपनी संस्कृति के माध्यमों एवं नयी आधुनिक विचारधारा वाली जिज्ञासा से प्रेरित होकर अपने अन्वेषणों की सीमाओं को जनजातीय कला से जोडकर कला को आगे बढ़ाने का आत्मसात किया है। बरण्डा के जन्म भूमि में चली आ रही पूजा, अनुष्ठानों संबंधित विषयो को चुनकर जनसामान्य तक पहुँचा रहे हैं। बरण्डा ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कलाकृतियों वह फोटोग्राफी द्वारा कई सम्मान व पुरस्कार अर्जित किये एवं कला केंद्र, संगठनों व कला भवन में आयोजित होने वाले जनजातीय कला शिविरों में अपनी कला से जनजाति छात्र–छात्राओं व समाज को संस्कार एवं संस्कृति से जुड़ाव स्थापित किया है।

दिलीप कुमार डामोर

खेरवाड़ा के भीली जनजाति के कलाकार दिलीप वर्तमान में उदयपुर में रहकर कला सृजन करने में व्यस्त हैं और आधुनिक

सूचना प्रणाली के माध्यम से देश–विदेश में होने वाले कलागत शिविरों, प्रतियोगिताओं व प्रदर्शनीयो से सम्मान अर्जित कर चुके हैं। डामोर ने भीली जनजाति में फली–फूली कला परंपराओं को अपनी कार्यकुशलता से समसामयिक कलाधारा में प्रविष्ट कर नए–नए सृजनात्मक कार्यों को प्रदर्शित कर कला को नयी पहचान दिला रहे हैं। अपनी संस्कृति से भी जुड़ाव का प्रदर्शन एवं अपनी भारतीय जनजातीय कला को मंच पर प्रस्तुत कर रहे हैं।

मांगीलाल गमेती

मांगीलाल उदयपुर में जन्मे एक जनजातीय कलाकार के रूप में माणिक्य लाल आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान में कार्यरत कलाकार दिनेश उपाध्याय ने आपके अन्दर छुपे कलाकार को पहचाना और मांगीलाल जी से पारंपरिक कला के उत्थान के प्रति जागरूक कर वर्तमान में गवरी लोक नृत्य के संबंधित पात्रों एवं कलाकारों के रूपाकरो को अपनी चित्रभूमि में रूप अंकित कर अभिव्यक्ति के रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं, मांगीलाल चित्रकारी के साथ–साथ एक उत्कृष्ट गवरी कलाकार भी है, जिससे इनकी कलाकृतियों को जनजातीय एवं गवरी नाट्य के सामूहिक संयोजन में कलाकृति सर्जन करना सरल हो गया है।

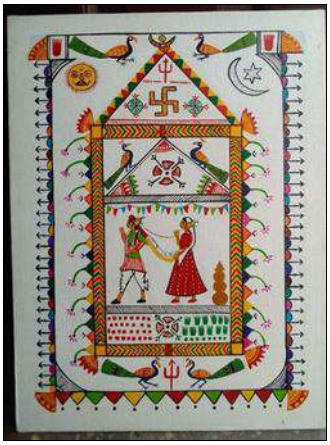

राजस्थान के मेवाड़ अंचल के जनजातीय कलाकारों के इसी क्रम में अपनी संस्कृति की पहचान दिलाने के लिए डिंपल, फूला मीणा, कुशल मीणा, सीमा डामोर, चंद्रिका, रमेश असोड़ा आदि परंपरागत एवं आधुनिक कला से तालमेल बैठाकर अपनी कला का प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं। इस हेतु भारत वर्ष के कई संगठन जैसे माणिक्य लाल आदिमजाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर (राजस्थान), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव कला संग्रहालय, भोपाल (मध्य प्रदेश), राष्ट्रीय ललित कला अकादमी (नई दिल्ली), भारत कला भवन, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर तथा एस.टी., एस.सी., टी.आर.आई. (उड़ीसा) द्वारा जनजातीय कला एवं कलाकारों को प्रोत्साहन के साथ एक मंच प्रदान कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. ट्राइब, जनजातीय मेले एवं त्यौहार विशेषांक, माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर. 2018–2019
2. प्रो. माधव हाडा (प्रधान संपादक) आदिवासी समाज, संस्कृति और साहित्य, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर – नई दिल्ली. 2016
3. साक्षात्कार रामदेव मीणा, डॉ. यशपाल बरांडा, दिलीप डामोर, डिंपल, मांगीलाल गमेती.